प्रातःक्लास 1/6/1968 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। बच्चे जानते हैं, हमको श्रीमत मिल रही है। हमको श्रीमत मिल रही है तो श्रीमत को भी याद करना चाहिए ना। वह मत अथवा राय दे रहे हैं, पढ़ा रहे हैं। पहले–2 कहते हैं बाप को और घर को याद करो। चलते–फिरत, उठते–बैठते तुम अपने घर को क्यों नहीं याद करते हो। ऐसा कोई मनुष्य होगा जो अपने घर को भूलता होगा? भल विलायत में होगा तो भी अपना घर तो याद होगा ना। बाप भी बच्चों को श्रीमत देते हैं। तो तुमको उनको याद करना है तब ही तुम पवित्र बनेंगे। तुम छी–छी हो। माया ने तुमको छी–छी चुह्यरा बना दिया है। तो बाप जो श्रीमत देते हैं, उनको याद करना है। बाप कहते है अपने घर को याद करो। फिर अपने सुखधाम की भी याद दिलाते हैं। यह तो भूलना न चाहिए। दुनियाँ में मानव मत तो अनेकानेक है। सभी एक/दो के मत पर ही चलते हैं। तुम बच्चों को अभी ईश्वरीय मत मिलता है। उनको भूलना न है। यहाँ तो बच्चे बाप को भी भूल जाते हैं। तो अपने घर को भी भूल जाते हैं। सुखधाम को भी भूल जाते हैं; इसलिए मुरझाए जाते हैं। बाप कहते हैं क्या तुमको लज्जा नहीं आती। बाप और घर को तुम भूल जाते हो। घर में तुम जा नहीं सकते हो; क्योंकि अपवित्र हो। मुझे याद करो तो तुम पवित्र बन जावेंगे और पवित्र धाम में पहुँच जावेंगे। कितना सहज समझाते हैं, मीठे–2 बच्चे भूलो मत। माया भुलाने की कोशिश ज़रूर करेगी; परन्तु तुम भूलो मत। बाप डायरैक्ट बैठ समझाते हैं, अभी तुमको अपने घर चलना है। अभी तुम नहीं चल सकते हो; क्योंकि तुम छी–2 हो। पवित्र गुल–2 बनेंगे तब ले जावेंगे। यह तो याद रहना चाहिए। बाप, घर, राजाई यह तो याद करना अच्छा है ना। तुम जानते हो हम राजाई में जाने वाले हैं। तुम बच्चे 5000 वर्ष पहले भी स्वर्ग़ के मालिक थे। अभी फिर तुम बनते हो। इसमें मूँझने की तो दरकार नहीं। तुम ही थे। फिर यह बनना है। कैसे बनेंगे? याद की यात्रा से। वहाँ कैसे सभी बनेगा! क्या होगा! इसमें मूँझने की तो दरकार ही नहीं। तुम्हारा घर जो था वही बनेगा, इसका तुम फिक्र न करो। तुमको तो जन्म लेना ही है स्वर्ग़ में, फिर जितना जो पुरुषार्थ करेंगे। यह पढ़ाई है ही नर्क से स्वर्ग़ में जाने की। इनको भक्ति नहीं कहा जाता। यह है ज्ञान। भक्ति मार्ग में कोई भी किसकी ऑक्युपेशन, बायोग्राफी को नहीं जानते। जैसे– बन्दर हैं। बन्दर कुछ समझते हैं क्या। जहाँ भी कुछ देखेंगे हप करेंगे। मन्दिर में भी कुछ(कूद)कर जावेंगे। वहाँ से भी कुछ न कुछ ने आवेंगे। तुम भी जहाँ–तहाँ घुस जाते हो, जो मिलता है, खा लेते हो। पता कुछ भी नहीं। सिर्फ़ नाम सुन लिया है यह देवी–देवताएँ हैं, बस। और कुछ नहीं जानते। हनुमान के पास ले जावेंगे। कहेंगे, हनुमान है। बस हाथ जोड़ो, पांव पड़ो, बस। यह मत मिलती है। बाप तो ऐसी मत देते नहीं। बाप तो कहते हैं, पहले–2 ऑक्युपेशन को जानो, नहीं तो अंधश्रद्धा हो जाती है। अभी तुम बच्चों ने यह तो समझा है कल्प इतने वर्षों का है। भक्ति को कहा ही जाता है– रावण राज्य। सिर्फ़ भक्ति नहीं, रावण राज्य कहा जाता है। यह भी तुम बच्चे ही जानते हो। दुनियाँ के मनुष्य तो बन्दर से भी बतदत हैं। मनुष्य, मनुष्य की ही बुद्धि पर चलते हैं। तुम अखबारें आदि तो पढ़ते नहीं हो। अभी हरियाना का गवर्नर आया है, कहते हैं, मेरा गुरु है नन्दा। यह मुझे जो कहेंगे वह करेंगे। यह हमारा गुरु है। ढउवाईज़र (एडवाज़र) है। अखबार में बैठ लिखा है। इसमें वह खुश होते हैं। वण्डर लगता है ना! वह गया कुरुक्षेत्र। वहाँ ताला(ब) है। तालाब में पानी होता है, वर्षा के कनेक्शन से। बरसात न पड़े तो तालाब का क्या होल होगा। भल पानी सूख जाता है तो भी उनको तीर्थ समझ जाते हैं। वहाँ जाकर अपन को मिट्टी मलते हैं। तो क्या तालाब पतित–पावन है? जबकि कहते हैं, गंगा पतित–पावनी है। अभी कहते हैं, वहाँ जो किचड़पट्टी लगी पड़ी है, उनको हेविन बनाओ। इसको हम कैपीटल करेंगे। नन्दा जो कहेंगे सो हम करेंगे। गुरु जी जो कहेंगे वह हम (मानेंगे)। देखो, (क्या) हालत है बगुले भक्त की। भक्त लोग बगुले ही होते हैं। बगुला क्यों कहा जाता है; क्योंकि मांस ..... विख .... रहते हैं। ज़हर खाते रहते; इसलिए हंस और बगुले इकट्ठे रह न सकें। हंस तो कब झगड़ा नहीं ..... बहुत बगुलों से तंग होते हैं। हंस मोती चुगते हैं। वह गन्द खाते हैं। पक्के निश्चय वाले

बगुलों के साथ रह न सकें। वह कोशिश करेंगे अलग रहने की। कहेंगे, हम क्यों अपना टाइम वेस्ट करें। हम हं(सों) का तो काम ही है सभी को मोती चुगाना। प्रजापिता ब्रह्मा कुमार–कुमारियाँ ब्राह्मण हैं, सभी हंस। बाक़ी तो हैं सभी शूद्र, बगुले। शूद्र पैर में हैं ना। विराट रूप भी तो है। दिखाते हैं देवता, क्षत्री, वैश्य, शूद्र। ब्राह्मणों को भूल गए हैं। शूद्र के बाद उनको ब्राह्मण कौन बनावे, इसका किसको भी पता नहीं है। ब्राह्मण बनने बिगर हम देवता बन नहीं सकते। सभी बगुले ही बगुले हैं। नॉलेज कुछ भी नहीं। बाप कहते हैं काम महाशत्रु है। तुम गाते भी हो, हे! पतित–पावन आओ तो अभी बाप कहते हैं, पावन बनो। तुम काम चिक्षा पर चढ़ने से पतित बने हो। नहीं तो तुम बताओ, पतित कैसे बने हो? विकार से ही मनुष्य पतित बनता है। अभी बाप भी कहते हैं, काम पर जीत पाने से तुम जगतजीत बनेंगे। यह (ल.ना.) चित्र है ना। तुम इस डिनायस्टी में जावेंगे। मैं जब आता हूँ तो नई दुनियाँ स्थापन करता हूँ। यह ल.ना. स्वर्ग़ के मालिक हैं ना। छोटेपन में राधे–कृष्ण, प्रिंस–प्रिंसेज़ थे। तुम यहाँ आए ही हो सतयुग का प्रिंस–प्रिंसेज़ बनने लिए। बाप कहते हैं काम महाशत्रु है। इनपर जीत पाने से तुम वैकुण्ठ, पवित्र दुनियाँ में जा सकते हो। काम पर जीत न पाई तो तुम स्वर्ग़ में जा नहीं सकते हो। स्वर्ग़ कहा ही जाता है– सतयुग को। त्रेता में राम–सीता को भी भल देवता कहते हैं; परन्तु 25 : कम। दो कला कम हो गए ना। तुम जानते हो हम यहाँ आए ही हैं नर से नारायण बनने। इनकी ही फिर झूठी कथा बैठ बनाई है, जो जन्म–जन्मांतर तुमने सुनी है। कब राम–सीता बनने लिए कथा नहीं सुनी है; क्योंकि वह स्वर्ग़ तो है नहीं। रामायण आदि के जो भी कथाएं सुनते आए हो, वह सभी हैं नर्क में ले जाने लिए। दुगर्ति ही हुई है। मनुष्य, मनुष्य को कब सद्गति दे न सके। अभी तुम, अभी तुम ब्राह्मण बच्चों को श्रीमत मिलती है। मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। यह भी समझते हो नम्बरवार याद करते हैं। डिटी डिनायस्टी में भी नम्बरवार होंगे ना। बाप समझाते हैं, तुम्हारे पास जो कुछ है वह ईश्वर की अमानत है। कहते भी हैं, यह बच्चा भगवान ने दिया है। धन होगा तो भी कहेंगे ईश्वर ने दिया है। ईश्वर की कृपा है। सच्च–2 ईश्वर की कृपा है; क्योंकि ईश्वर अर्थ जो कुछ दान–पुण्य आदि करते हैं तो फिर दूसरे जन्म में अल्पकाल के लिए मिलता है। जैसे–2 कर्म हैं– कोई धर्मशाला बनाते हैं, कोई युनिवर्सिटी, स्कूल बनाते हैं तो विद्या अच्छी मिलती है। जैसा कर्म वैसा फल मिलता है। मनुष्य मात्र तो ढेर के ढेर हैं, एक न मिले दूसरे से। यह ड्रामा है ना। इसमें कुछ भी फ़र्क पड़ नहीं सकता। जो जिसको पार्ट मिला हुआ है वह ज़रूर बजावेंगे। जिसने जो पार्ट कल्प पहले बजाया होगा वही बजावेंगे। यह है ड्रामा। तुम स्थूलवतन–सूक्ष्मवतन दोनों का बताते हो। मूलवतन में भी एक्टर्स नम्बवार ही रहते हैं। फिर अपने–2 समय पर आते हैं; परन्तु अवतार एक को कहा जाता है। यूँ तो सभी आत्माएँ अपना–2 शरीर धारण कर पार्ट बजाती हैं। जब ड्रामा का चक्र पूरा होता है तो बाप कहते हैं, मुझे आना पड़ता है। माया का राज पूरा होता है। तो मैं फिर आकर तुमको सतयुग, त्रेता का राज–भाग देता हूँ। भगवान ही स्वर्ग की स्थापना करते हैं। फिर रावण राज्य शुरू होता है। रावण को जलाते हैं। वह समझते हैं परम्परा से जलाते आते हैं। बाप समझाते हैं, पहले तो तुम एक ही शिव की पूजा करते थे। उस समय यह सभी कहाँ से आए। वह तो पीछे आते हैं। मनुष्य तो सभी कह देते परम्परा से अर्थात् हमेशा चला (आता) है, कब बंद होता ही नहीं। बिल्कुल जैसे– ठिक्कर, पत्थर, बुद्धि हैं। कोई अच्छी रीत पढ़ते नहीं हैं तो कहते हैं ना ..... ना तुम तो पत्थर बुद्धि हो, कुछ भी पढ़ते नहीं। बेहद का बाप बेहद के बच्चों को भी ऐसे ही कहते हैं। मुझे याद कर(ो) तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। तुमने अन्जाम किया आप आवेंगे तो हम आपके ही मत प(र) चलेंगे। जैसे, वह गवर्नर कहता है हम नन्दा क(ी) मत पर ही चलेंगे। यह फिर है बेहद की बात। बाबा हम आ(प)के श्रीमत से हम श्रेष्ठ बनेंगे। श्रीमत मिलती है एक। भ्रष्टाचारियों की तो है, भ्रष्टाचारी मत। रावण राज्य

यह तुम पहले नहीं समझते थे। मनुष्य जो सुनाते थे तुम भी सत्य–2 कहते थे। अभी अज्ञान अंधेरे में सोए हुये हैं ना। तुम भी कुम्भकरण के नींद में थे अभी बाबा ने जगाया है। बाप कहते हैं, जिस रथ में मैंने प्रवेश किया है यह भी बन्दर बुद्धि था। सभी का हेड था। फर्स्ट सो लास्ट लास्ट सो फर्स्ट। फर्स्ट में जो डिनायस्टी वह फिर भी होगी। सो भी नम्ब(रवा)र। सभी के 84 जन्म नहीं होते, कम–कम भी होते जाते हैं। अभी तो बाप यहाँ है कोई ऊपर से आवेगा उनका क्या जन्म होगा। एक जन्म करके समझो। कोई का दो कोई का तीन हो; परन्तु नहीं। बाप कहते हैं एक; क्योंकि जो भी नये आते हैं उनकी महिमा होती है। फिर ऊपर में सब पत्ते पिल्ले(पीले) हो जाते हैं। झाड़ के राज़ को भी बच्चे ने समझा है और समझाने लायक बने हैं। तुम्हारा एक चित्र भी काफ़ी है। श्याम–सुन्दर दिखाते हैं। बोलो, पुनर्जन्म तो ज़रूर मनुष्य ही लेते हैं ना। सतयुग से शुरू होता है। श्रीकृष्ण तो छोटा बच्चा है। दुनियाँ इन बातों को नहीं जानती है। पत्थर बुद्धि है। हम भी कम नहीं थे। सबसे जास्ती पत्थर बुद्धि थे; इसलिए सबसे पहले पारस बुद्धि बन रहे हैं। गाया भी जाता है पत्थर बुद्धि सो पारस बुद्धि, पत्थर(पारस) बुद्धि सो पारस(पत्थर) बुद्धि। पारस राज्य सो पत्थर राज्य। पारसनाथ और पारसनाथनी का राज्य था ना। नेपाल में फिर पारसनाथ के बदले पशुपतिनाथ कह देते हैं। यानि जनावरों का नाथ। पशुपति नाम है ना। बोलो जनावर तो सभी हैं ही। तुम खुद ही जनावर हो; क्योंकि तुम अपने आप को नहीं जानते हो। अपने से भी जास्ती बाप की निन्दा कर दी है। अपन को 84 लाख योनियां कहते हैं बाप को तो ठिक्कर–पत्थर, कण–2 में ले गये हैं। बाप कहते हैं, जब–2 भारत का (ऐ)सा हाल होता है यदा यदा हि.....यह अक्षर गीता में ही है और कोई शास्त्रों में नहीं हैं। यह सभी शास्त्र हैं मनुष्य मत की। श्रीमत नहीं है; क्योंकि गीता का ज्ञान तो भगवान ने ही सुनाया है। उनका एक ही शास्त्र है। मनुष्य मत पर चलते–2 तुम तमोप्रधान हो गये हो। फिर श्रीमत से सबका कल्याण हो जाता है। मनुष्य सृष्ट के बदले दैवी सृष्टि स्थापन हो जाती है। बाप फिर समझा रहे हैं। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार समझते जाते हैं। बाप तो चाहते हैं बहुत समझाने वाला तैयार हो निकले; परन्तु निकलते नहीं हैं। कोई को क्या बन्धन कोई को क्या। सर्विस न करेंगे तो इतना फल भी (नहीं) मिलेगा। बाप कोई राज़ी थोड़े ही होंगे। बाप तो एक–2 को जानते हैं कि हमको याद करने वाले (कौन–)2 हैं। सर्विस करने वाले कौन–2 हैं। आते तो बहुत हैं; परन्तु वह सभी हैं अल्पकाल के लिए। बाप जानते (हैं वह) आत्मा कोई काम का नहीं। तुच्छ बुद्धि हैं। यह फर्स्ट क्लास बुद्धि, यह सेकण्ड क्लास बुद्धि, यह थर्ड क्(लास बुद्धि) है। यह क्या किसको खैंच सकेंगे। सामने ऐसे आकर (ख)ड़े होते हैं जैसे कि बहुत याद करते हैं। भल बा(प) ..... प्यार बहुत करते हैं; क्योंकि डिपलोमेन्ट है ना। जानता हूँ अच्छी रीत से फिर भी प्यार से और आर से समझाता हूँ तुम सर्विस नहीं करते हो तो सच्चा प्यार भी नहीं करता हूँ। अच्छे बच्चे जो हैं उन तरफ दिल खैंचती है। (यह) आज्ञाकारी सपूत है। पूछते हैं बाबा क्या करें? बाबा क्या देते हैं। अपने काम लगाओ। बाबा खुद कहते हैं कांटों पर भी प्यार तो फूलों पर भी प्यार। कलियुग में कांटे भी हैं तो फूल भी हैं। सतयुग में दोनों इकट्ठे नहीं होते(।) कई समझते हैं बाबा थोड़े ही यह कुछ जानता है हमारी चलन को। अरे बाबा को जानने की भी क्या दरकार है। जो करता है सो प(ा)ता है। मुझे जानने वा देखने की दरकार थोड़े ही है। याद करेंगे तो उसका सभी फल तुमको ही मिलेगा। याद करेंगे ही नहीं सिर्फ़ कहते रहेंगे तो अपना पद भी भ्रष्ट कर देंगे। बाबा जानने की वा देखने क्या पड़ी है। कोई विकार में जाते हैं और यहाँ कहें हम निर्विकारी हैं तो झूठ बोला तो सौणा डण्ड उनक(ो) पड़ेगा। और ही अपन को घाटा में डाला। यहाँ कइयों से पूछा जाता है कोई से अवज्ञा की वा किसको दुःख दिया। कोई भी हाथ नहीं उठाते। मेरे ध्यान में 300 में से दस–बीस के सिवाय सभी को हाथ उठाना चाहिए; क्योंकि बाप के मुख फरमान को मानते ही नहीं। बाप कहते हैं मामेकं याद करो। मूल बात है यह

याद नहीं करते हैं यह भूल हुई ना। अपना ही पद भ्रष्ट कर देते; परन्तु देह–अभिमान कारण अपनी भूल बताते नहीं हैं। भूलें वास्तव में सभी करते हैं सभी को हाथ उठाना पड़े। अभी अभूल बन जाएं तो कर्मातीत अवस्था हो जाए। बाप को याद नहीं करते तो भूल है। यर्थाथ् याद से भी सम्पूर्ण पवित्र बनते हो। बाप कहते हैं हे बच्चों मामेकं याद करो। याद नहीं करते हैं तो ज़रूर एक दो को दुःख भी देते होंगे। अपन को दुःख देते होंगे। सम्पूर्ण 16 कला तो कोई बना नहीं है तो ज़रूर कोई न कोई भूल होती है। मुख्य बात है यह बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो तो जन्म–जन्मांतर का बोझा जो सिर पर है वह उतर जावेगा। पतित पावन बाप को साधु–संत आदि सभी भूले हुए हैं। समझते हैं पानी में स्नान करने से पावन बन जावेंगे। तालाब में भी जाते हैं पानी सूख जाता है तो भी उनका तीर्थ कायम रहता है। थोड़ा पानी भी उसमे डाल मिट्टी बैठ मलते हैं। पत्थर को भी पूजेंगे। माथा पर रखेंगे जैसे भैंस को मिट्टी में मज़ा आता है ना। वैसे तीर्थवासी भी जैसे भैंस बुद्धि हैं। भक्ति मार्ग बना ही भैंस बुद्धि के लिए है। समझते कुछ भी नहीं। तवाई मिसल सिर्फ़ देखते रहते हैं। भक्ति मार्ग में सभी हैं भैंस बुद्धि। गर्मी बहुत लगती है; इसलिए जाकर ठंडे पानी में बैठते हैं। उनमें गर्मी है विकार की; इसलिए तुमको चाहिए ठण्डी शीतलता। वह काम अग्नि जलाती है। मैं ज्ञान चिक्षा पर बिठाकर शीतल बनाता हूँ। काम चिक्षा पर बैठ जन्म–जन्मांतर के पाप सिर पर चढ़ती गई हैं। भक्ति पाप कराती है। काली भैंस बुद्धि बन पड़ते हैं। भैंस काली होती है। कृष्ण को भी काला बनाया है ना। भगवानुवाचः काम चिक्षा पर बैठने से काले बन जाते हैं; इसलिए कृष्ण को काला दिखाया है। इस पर भी मनुष्य बिगड़ते हैं। कहते हैं तुम ब्रह्माकुमार–कुमारियां इनको काला कहते हो। यह तो सर्वव्यापी है। यह काला कैसे हो सकता। अरे, तुमने ही तो काला चित्र बनाया है। हम इसका अर्थ समझाते हैं। यह गोल्डेन एज्ड में थे। फिर आयरन एज्ड में आए। यह है ही आयरन एज्ड वर्ल्ड। लोहा काला होता है। काम चिक्षा पर चढ़ी हुई आत्मा काली होती है। तो शरीर भी काला बन जाता है। पवित्र आत्मा तो शरीर भी पवित्र मिलेगा। तुम यहाँ आए ही हो आत्मा को पवित्र बनाने। अभी देखो मनुष्य मनुष्य को गुरु बनाते हैं। तो बड़ा कौन–2 गवर्नर या उनका मिनिस्टर। विचारों को कुछ भी पता नहीं है। सभी काले आयरन एज्ड भैंस बुद्धि हैं। भक्ति भैंस बुद्धि बना देती है। मैं फिर गोरा बनाता हूँ। कृष्ण को श्याम–सुन्दर कहते हैं ना। कोई भी नहीं जानते। कृष्ण तो सतयुग का मालिक था वह फिर कहाँ गया। 84 पुनर्जन्म तो ली है ना। सबसे पहले नम्बर में कौन है, जो मू(ल)वतन से मुझे छोड़कर आते हैं। मुख्य तो कृष्ण को ही कहेंगे। लक्ष्मी–नारायण भी 25–30 वर्ष के बाद नाम पड़ता है। शादी के बाद नाम बदलता है। तो पुनर्जन्म लेते–2 सांवरा बन जाते हैं। तो बाप भैंस बुद्धि से आकर ईश्वरीय बुद्धि बनाते हैं। मनुष्य मत से काले बन जाते हैं। अभी तुमको मिलती है ईश्वरीय मत। भक्ति सिखलाने वाले असुर आसुरी बुद्धि हैं। भक्ति करते–2 तमोप्रधान बन जाते हैं। हिसाब भी बताया है ना। जो सबसे जास्ती भक्ति करते हैं उनको ह(ी) फल मिलता है। 21 जन्म पूरे हुये फिर वाम मार्ग में जा(ते) हैं। आत्मा पुनर्जन्म लेती रहती, पुनर्जन्म में नाम–रूप देशकाल सभी बदल जाते हैं। अभी कृष्ण तो है नहीं। हाँ, जो होकर गये हैं उनके चित्र हैं। पूछते हैं; परन्तु अर्थ रहित। अच्छा मीठे बच्चों को याद प्यार गुडमॉर्निंग।

बम्बई में पुष्पशांता का कोलावा में नया सेन्टर खुला है

जिसकी एड्रेस भेज रहे हैं।:–

**BRAHMA KUMARIS**
**Flat N0. 33**
**ANJALI**
**Near radio club**
**Colaba**
**BOMBAY-5**